International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 25-03-2022, Accepted: 07-04-2022, Published: 25-04-2022
Volume 4, Issue 1, 2022, Page No. 29-31

जगदीशचंद्र कृत 'धरती धन न अपना' में दलित नारी चित्रण

जी. वसंती
एसोशिएट प्रोफोसर, हिंदी विभाग, सविता विदेशी भाषा केंद्र, सविता स्कूल ऑफ इन्जीनियरिंग, एस.आई.एम.ए.टी.एस., सविता विश्वविद्यालय, चेन्नई, तमिलनाडू, भारत

सारांश
उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में जगदीशचंद्र जी का योगदान अमर है। उन्होंने उपन्यास रचना द्वारा हिन्दी उपन्यास के एक महत्वपूर्ण स्थान पूर्ति की है। दलित जीवन, भारतीय समाज का बहुत बड़ा हिस्सा है, जो सामाजिक जीवन में तो उपेक्षित रहा ही है, सृजनात्मकता के क्षेत्र में भी बहुत उपेक्षित रहा है। जगदीशचंद्र इस जीवन को केन्द्र में रख अपनी उपन्यास – त्रयी रची है, जो अब हिन्दी उपन्यास साहित्य व भारतीय साहित्य की एक अनुपम उपलब्धि है। जगदीशचंद्र जी को उनके 'धरती धन न अपना' उपन्यास से लोकप्रियता हासिल हुई। यह उपन्यास दलित जीवन की महागाथा के रूप में सामने आता है। उन्होंने 'धरती धन न अपना' में दलित नारी समस्याओं में पारिवारिक समस्याओं के साथ–साथ सामाजिक समस्याओं का चित्रण अधिक मात्रा में हुआ है। सामाजिक समस्याओं में दलित नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण, आर्थिक परतंत्रता, दमन एवं शोषण, बदलते स्त्री–पुरुष संबंध, अन्याय–अत्याचार आदि मुख्य समस्याओं का चित्रण किया है। इस शोध आलेख में जगदीशचंद्र जी कृत 'धरती धन न अपना' में चित्रित दलित नारी समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है।

मूल शब्दः 'धरती धन न अपना' में दलित नारी चित्रिण, समस्याएँ, दलित नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण, आर्थिक परतंत्रता, दमन एवं शोषण, बदलते स्त्री–पुरुष संबंध, अन्याय–अत्याचार

प्रस्तावना
मानव–समाज का रथ पुरुष और स्त्री, इन दो पहियों पर चलता है। दोनों पहियों में से एक में भी विकृति आ जाने पर रथ की गति अवरुद्ध हो जायेगी। इसलिए हमारे प्राचीन समाज में पुरुष और नारी दोनों को समान महत्त्व दिया गया है। वैदिक काल में नारियाँ समाज में पूजित थीं। मनुस्मृति के अनुसार – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। नारी के इस महत्त्व के चलते ही प्राचीन काल में नारी–शिक्षा का काफी प्रचार था। इसका प्रमाण है कि वेद की ऋचाओं की द्रष्टा करीब एक सौ पचास नारियाँ हैं। मैत्रेयी, लोपामुद्रा, विश्वधारा, सिक्ता, घोषा, गार्गी, विदुला, अनुसूया, सावित्री आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।
लेकिन कालक्रम ने हमारी संस्कृति के इस महत्त्वपूर्ण अंग पर कुठारघात किया। असंगठित होने के चलते हम पर बार–बार विदेशी आक्रमण होने लगे। फलतः जान–माल और इज़्ज़त सभी खतरे में पड़ गये। इज़्ज़त के डर से कन्याओं को बन्द रखने पर हम विवश हो गये। बाल–विवाह जैसी कुप्रथा का जन्म हुआ। नारी–शिक्षा तो प्रायः लुप्त सी हो गयी। धीरे–धीरे समाज में यह धारणा बन गयी कि नारी की सार्थकता केवल बच्चों को जन्म देने और घर–गृहस्थी सम्भाल तक ही सीमित है, नारी को लोग सिर्फ भोग–विलास की वस्तु समझ बैठे। सीता और सावित्री के देश में नारियाँ पूजित होने की बजाय अपमानित होने लगीं। जिस घर में बच्ची पैदा होती है, उस घर में शोक छा जाती है। इस प्रकार रथ का एक पहिया विकृत हो गया। इसका परिणाम हम अब तक भुगत रहे हैं। हमारे देश की प्रगति एकांगी हो गयी। लोग यह भूल बैठे कि जिन हाथों में चूडियाँ शोभती हैं, उन्हीं में समय आने पर तलवार भी चमकती है। रजिया बेगम, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई इसके उदाहरण हैं। जब समाज में नारी की दशा ही ऐसी हो तो दलित नारी की तो पूछना ही नहीं।

जगदीशचंद्र
साहित्य जगत में जगदीशचंद्र जी का समावेश उन महान साहित्यकारों में किया जा सकता है जिन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी अलग पहचान रखी है। व्यक्तिगत पीड़ा से ऊपर उठकर समाजहित को ध्यान में रखकर साहित्य निर्मित करने वाले साहित्कारों की पंक्ति में जगदीशचंद्र जी को सम्मिलित किया जाता है। उन्होंने दलितों के जीवन को निकट से देखा और अनुभव किया था। इसलिए उनकी रचनाएँ शोषित, पीड़ित और उपेक्षित मानव की यथार्थ कहानी प्रस्तुत करती है।

'धरती धन न अपना' की कथा
'धरती धन न अपना' उपन्यास में शहर की आबोहवा लेकर गाँव आए नौजवान काली के माध्यम से लेखक ने खेती पर आश्रित मज़दूरों, कम्मियों की दारुण जीवन स्थिति का बहुत मार्मिक चित्रण किया है।
चौबीसों घंटे ज़मीन में गाड़ लेने के बावजूद भी इनके पास एक बीघा जमीन नहीं है। वे जहाँ रहते हैं दूसरों की मिल्कियत है। उखाड़े जाने का डर उनके जेहन में बस जाने के कारण वे चौधरियों के सामने दब्बू बन जाते हैं। गाँव के जमींदारों के अन्याय–अत्याचार से पीड़ित दलित समाज पूरी तरह से उन पर आश्रित होने के कारण गाँव छोड़कर कहाँ

जाएगा? काली के नेतृत्व में एक संघर्श की लड़ाई खेलने का प्रयास किया जाता है लेकिन चारों ओर से घिरे चमार ज़्यादा देर टिक नहीं पाते।
लड़ाई में हारे सरदार का जो हश्र होता है वही काली का हुआ। कभी अनुयायी बनकर कृतार्थ होने वाले साथी उसकी बेइज़्ज़ती पर उतर आते हैं। परिस्थिति से निराश, दुःखी, पराजित काली ज्ञानो के प्यार के आँचल में सुकून पाता है। भावावेश में बहकर ज्ञानो गर्भवती हो जाती है। समाज की नज़रों से उतरे काली को उनके रोष का सामना करना पड़ता है। ज्ञानों को पाने के लिए संघर्ष करने के बदले वह शहर भाग जाता है।
काली का इस तरह ज्ञानो को अकेली छोड़कर भाग जाना कुछ अखरता ज़रूर है लेकिन यथार्थ के ठोस धरातल पर आकर सोचे तो यह पता चलता है कि एक ग्रामीण युवक और कितना जोखिम उठा सकता है। काली 'जान बची लाखो पाए' कहावत को चरितार्थ करता है लेकिन उसी से उसके सब किए कराए पर पानी फिर जाता है।

'धरती धन न अपना' में दलित नारी चित्रण

मूलतः 'धरती धन न अपना' नारी केंद्रित उपन्यास न होने के बाद भी जगदीश चंद्र जी ने दलित नारी समस्या को रेखांकित किया है।
'धरती धन न अपना' उपन्यास में मुख्य दलित नारी पात्र के रूप में 'ज्ञानो' का चित्रण हुआ है। ज्ञानो एक ऐसा नारी पात्र है जो काली के चरित्र को गति प्रदान करने के साथ–साथ दलित नारी जीवन की व्यथा को भी प्रकट करता है। इस उपन्यास में अन्य नारी पात्रों में चाची प्रतापी, निहाली, प्रीतो, लच्छो, पाषो आदि कुछ उल्लेखनीय नारी पात्र हैं। ज्ञानो निडर, साहसी और संवेदनशील नारी है।
समाज द्वारा पीड़ित नारियों की संख्या सबसे ज़्यादा है। जगदीश चंद्र जी के साहित्य में समाज के द्वारा पीड़ित नारियाँ निम्न स्तर का जीवन जीती हैं। 'ज्ञानो' भी ऐसा ही एक पीड़ित नारी पात्र है। काली से प्रेम करने वाली ज्ञानो गर्भवती हो जाती है। सारी चमार बस्ती उनके संबंधों को जान जाती है। बस्ती के मनचले ज्ञानो को छेड़ने लगते हैं। ज्ञानो और काली को एकांत में देखकर घड्डम चौधरी कहता है – '

'मोरनिये, तेरे अंदर कितनी आग है जो बुझने में नहीं आती है।''[1]

इसी उपन्यास का 'लच्छो' भी एक ऐसा ही पात्र है जो चौधरियों द्वारा पीड़ित है। लच्छो के घर की गरीबी का फायदा उठाकर चौधरी हरनाम का बेटा हरदेव उस पर बलात्कार करता है।

''उसने सिट्टे उठाने के लिए हाथ बढ़ाये तो उसके सीने पर दो हाथ रेंगने लगे। उसके मुँह से हल्की–सी चीख निकली और वह अपने–आपको छुड़ाने के लिए हाथ–पाँव मारने लगी।''[2]

दलित नारी का समाज और परिवार दोनों शोषण करते हैं। उनका सबसे ज़्यादा शोषण परिवार में होता है। नारी शोषण की बहुत लंबी परंपरा है। उसे देवता से जानवर के रूप में तबदील होते देखा। नारी को भोग का साधन मानकर उसका शोषण किया जाने लगा। नारी शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर शोषित रही। मध्ययुग में नारी को एक वस्तु का दर्जा मिल गया, जिसे खरीदा या बेचा जा सकता है। आधुनिक काल में कुछ नारियाँ इस कारा से मुक्ति पाने में सफल हुईं लेकिन उनकी संख्या गिनी–चुनी ही थी।
हमारे समाज में नारी का मतलब एक स्त्रीलिंग है। वासना पूर्ति के लिए नाबालिंग, मासूम बच्चियों को भी बख़्शा नहीं जाता। बस किसी तरह स्खलित होना है। नारी के प्रति समाज की विकृत मानसिकता को प्रकट करने के लिए लेखक भाषिक क्षमता का प्रयोग करते हैं –

''पट्ठे ने उसे पूरी तरह जवान भी नहीं, होने दिया। पहले ही उस पर लाठी डाल दी।''[3]

इस वाक्य से स्पष्ट हो जाता है कि किसी अल्पवयीन लड़की के लिए पुरुष का लिंग लाठी के समान ही है। लाठी शब्द से अत्याचार की गंभीरता समझ में आती है।
'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित नारी की विवशता का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। सामाजिक नीति–नियम, रीति–रिवाजों तथा पारिवारिक बंधनों में जकड़ी नारी अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ न उठाने को विवश होती है। वह अकल्पनीय तथा असहनीय अत्याचार सहन करती है। बचपन में माता–पिता की इच्छा के लिए, यौवनावस्था में पति या प्रियतम की भावना का ख्याल करते हुए तो वृद्धावस्था में बेटे–बेटियों के भविष्य की चिंता के कारण वह सब कुछ सह लेती है। उसका सारा जीवन विवशता में गुज़र जाता है। पराश्रित जीवन विवशता का शिकार होगा ही। एक बार विवाह किया माता–पिता की जिम्मेदारी समाप्त होती है। विवाहित नारी को ससुराल में सताया जाने लगा तो उसका कोई नहीं होता।
ज्ञानो भी भाई और माता के विरोध के सामने कुछ नहीं कर सकी। ज्ञानों को काली से प्रेम है। उसकी माता जस्सो और भाई मंगू काली से घृणा करते हैं। बिरादरी का पोला अहंकार काली के साथ ज्ञानो की शादी करने में बाधा बन गया है। ज्ञानो को कमरे में बंद किया जाता है। काली से मिलने नहीं दिया जाता। मिलन की तीव्र इच्छा को दफन करके वह मूक बनी देखती रहती है। ज्ञानो के तीन महीने के गर्भ को गिराने के प्रयोग आरंभ हो जाते हैं। उसे किस्म–किस्म के काढ़े पिलाये जाते हैं।
ज्ञानो न चाहते हुए भी सह रही है। माता और बिरादरी के सामने वह विवश है। उसकी माता भी बिरादरी के सामने विवश है क्योंकि वह –

"अपने ही मुहल्ले, अपनी ही गली और अपने ही गोत्र के लड़के से कैसे विवाह कर सकती है। ऐसा आज तक कभी नहीं हुआ है। मुहल्ले वाले यह सुनते ही उन्हें कच्चा खा जायेंगे और उन्हें इलाके में तो क्या, श्मशन भूमि में जगह नहीं मिलेगी।''[4]

सामाजिक बंधनों से डरी जस्सो विवश होकर ज्ञानो को ज़हर देने का निर्णय लेती है। माता के सामने विवश ज्ञानो गर्भपात का काढ़ा समझकर पी जाती है और मृत्यु का आलिंगन देती है। यहाँ न ज्ञानो का न जस्सो का दोष है। दोनों अज्ञानी और आदिम समाज व्यवस्था की बलि है।

किसी घटना की अथवा परिस्थितियों की विषमता या अतृप्त आकांक्षाओं आदि के कारण पात्रों के मन पर ऐसा आघात पड़ता है कि उनका स्वाभाविक रूप दब जाता है। उनका व्यवहार अस्वाभाविक हो उठता है। ये पात्र कुण्ठित कहलाते हैं। उनके व्यवहार के मूल में उनकी कुण्ठा काम करती रहती है। लच्छो पर बलात्कार क्या हुआ उसका जीवन ही बदल गया। अब वह पुरुषों से डरती नहीं बल्कि उनके साथ खिलवाड़ करती है। अब उसे इस खेल में आनंद मिलने लगता है। अब उसके रिश्ते लुच्चे–लफंगों से बन जाते हैं। कोई कुण्ठाग्रस्त नारी ही इस प्रकार का आचरण कर सकती है। गाली वही देता है जो कुण्ठाग्रस्त होता है। अनेक अभावों से परेशान दलित नारियाँ बात–बात पर गालियाँ देती हैं। वास्तव में इन गालियों के पीछे अभावों की मानसिक तृप्ति के फलस्वरूप गालियाँ की बौछार कर देती है।

''राँड सलाह तो ऐसे दे रही है जैसे काली के चौबारे में इसी का पलंग बिछेगा।''[5]

'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित नारी जीवन का सजीव चित्रण हुआ है। सब नारियाँ दिन भर काम करती हैं। हर रोज के परिश्रम के बाद ही घर में चूल्हा जलता है। चौधरियों के घर झाड़ू लगाना, जानवरों का गोबर उठाना, चारा–पानी करना, खेतों में काम करना आदि काम चलते रहते हैं। चौधरानी के बताए हुए काम करने पड़ते हैं। तभी छाछ या बासी रोटी मिल जाती थी।

''चमादड़ी के सब मर्द काम पर चले गये थे। स्त्रियाँ गोबर और कूड़ा–करकट उठाने के लिए चौधरियों की हवेलियों में पहुँच गयी थी।''[6]

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जगदीशचंद्र दलित नारियों की बुनियादी समस्याओं को वाचा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। प्रस्तुत उपन्यास में दलित नारियों के प्रति किए जाने वाले अमानवीय व्यवहार, अन्याय, अत्याचार और शोषण का यथातथ्य चित्रण हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ

1. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 266
2. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 97
3. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 135
4. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 278
5. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 41
6. जगदीश चंद्र, धरती धन न अपना, पृष्ठ सं. 261